नायक-राणा प्रताप का चरित्र चित्रण

उत्तर : पं० गंगारत्न पाण्डेय द्वारा रचित **'मेवाड़ मुकुट'** खण्डकाव्य के नायक महाराणा प्रताप हैं। कवि ने उनको 'मेवाड़ मुकुट' कहा है, जो कि सब प्रकार से उचित ही है। वस्तुत: वे मुकुट की आन-बान-शान की रक्षा करना जानते हैं। उनके चरित्र की निम्नलिखित विशेषताओं के द्वारा भी यह बात भली-भाँति स्पष्ट हो जाती है—

(1) महापराक्रमी तथा दृढ़प्रतिज्ञ—महाराणा प्रताप ओजस्वी व्यक्तित्व के स्वामी हैं। वे युद्धस्थल में शत्रुओं को धराशायी करने में सक्षम हैं। उनके पराक्रम का लोहा स्वयं अकबर भी मानता है। राणा प्रताप सदैव अविजित रहे। उन्होंने अपनी मेवाड़ भूमि को स्वतन्त्र कराने का दृढ़ संकल्प लिया है। उनकी प्रतिज्ञा को कवि ने अग्रलिखित शब्दों में व्यक्त किया है—

जब तक तन में प्राण, लड़ेगा, पल भर चैन न लेगा।
सूर्य-चन्द्र टल जाए, किन्तु व्रत उसका नहीं टलेगा।।

अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए राणा प्रताप नगर छोड़कर वन में मारे-मारे फिरते हैं। मेवाड़ को मुक्त कराने के लिए दृढ़प्रतिज्ञ महाराणा प्रताप भूमि पर सोते हैं और चाँदी के थाल में भोजन करना अस्वीकार कर देते हैं।

(2) शरणागतवत्सल—राणा प्रताप का हृदय अत्यन्त उदार एवं विशाल है। वे शत्रुपक्ष की कन्या दौलत को शरण देते हैं और उसे अपनी पुत्री के समान ही पालते हैं। इस सम्बन्ध में कवि के उद्‌गार देखने योग्य हैं—

अरि की कन्या को भी उसने, रख पुत्रीवत् वन में।
एक नया आदर्श प्रतिष्ठित, किया वीर जीवन में।।

(3) मातृभूमि-रक्षक—महाराणा प्रताप निरन्तर कष्ट भोगते हैं; किन्तु वे अकबर की शरण में जाने को तैयार नहीं हैं। वे तो अपने भाई शक्तिसिंह को भी उसके दासतापूर्ण जीवन के लिए धिक्कारते हैं। भयंकर कष्ट सहने पर भी वे अकबर के सम्मुख झुकना नहीं चाहते। मेवाड़ को स्वतन्त्र कराना ही उनके जीवन का उद्देश्य है। देशप्रेम पर आधारित अपनी भावनाओं को राणा प्रताप ने इन शब्दों में प्रकट किया है—

या तो फिर मेवाड़-देश, निज गत गौरव पाएगा।
या प्रताप वन-वन भटकेगा, यों ही मर जाएगा।।

महाराणा प्रताप जीवन की अन्तिम श्वास तक मेवाड़ की स्वतन्त्रता के लिए लड़ते रहते हैं।

(4) आत्मविश्वासी तथा स्वाभिमानी—महाराणा प्रताप में आत्मविश्वास की भावना प्रबल रूप में विद्यमान है। वे अपने पराक्रम तथा शौर्य के बल पर ही शत्रु से लोहा लेना चाहते हैं। उनकी इसी भावना को देखकर ही कवि पृथ्वीराज तथा सेठ भामाशाह उनकी सहायता करते हैं। वे अकबर की गुलामी में रहने की अपेक्षा मर जाना अधिक अच्छा समझते हैं। स्वाभिमान की रक्षा के लिए वे आजीवन वनों में रहकर संकटों का सामना करते हैं।

(5) अत्यन्त भावुक-हृदय—पराक्रमी महाराणा प्रताप अत्यधिक भावुक भी हैं। अपनी रानी लक्ष्मी को चिन्तित देखकर वे द्रवित हो जाते हैं। वे रानी का साहस बढ़ाते हैं और अपने पराक्रम को याद करके शत्रु को पराजित करने का दृढ़ संकल्प लेते हैं। प्रताप का भाई शक्तिसिंह अकबर की दासता स्वीकार कर लेता है, फिर भी वे उसे क्षमा कर देते हैं। भाई के प्रति उनके ये भाव उनकी भावुकता के ही परिचायक हैं—

'मेरा ही है, मुझसे दूर कहाँ जाएगा।'

इसी प्रकार अपने अश्व 'चेतक' की मृत्यु पर भी वे अत्यन्त शोकाकुल हो उठते हैं।

(6) वात्सल्यपूर्ण पिता—दौलत के मुख से निकले हुए शब्द राणा प्रताप के वात्सल्य को प्रकट करते हैं। दौलत कहती है—

सचमुच ये कितने महान् हैं, कितने गौरवशाली।
इनको पिता बनाकर मैंने, बहुत बड़ी निधि पा ली।।

(7) दृढ़-संकल्पी स्वप्नद्रष्टा—महाराणा प्रताप महत्त्वाकांक्षी और स्वप्नद्रष्टा युवा थे और उन स्वप्नों को साकार करने के लिए वे उससे भी अधिक दृढ़-संकल्पी थे। उन्होंने मेवाड़ की स्वतन्त्रता का स्वप्न देखा और उसे साकार करने के लिए आजीवन संघर्षरत रहे। उनकी इस विशेषता पर प्रकाश डालते हुए कवि गंगारत्न पाण्डेय ने खण्डकाव्य की भूमिका में लिखा है—"राणा प्रताप कोरे स्वप्नदर्शी नहीं हैं। ऊँची-ऊँची कामनाएँ और महत्त्वाकांक्षाएँ पालना एक बात है, उन महत्त्वाकांक्षाओं को सफल करने के लिए सुविचारित कदम उठाना बिल्कुल अलग बात है। स्वप्नदर्शी कोई भी हो सकता है। अपने सपनों को साकार रूप दे सकनेवाले विरले ही होते हैं, क्योंकि इसके लिए जिस त्याग, साहस, शौर्य और धैर्य की आवश्यकता होती है, वह सर्वसुलभ नहीं है।" जबकि महाराणा प्रताप में ये गुण पुंजीभूत हो गए थे।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि महाराणा प्रताप इतिहास के एक ऐसे महापुरुष थे, जिनसे राष्ट्र की भावी पीढ़ियाँ जातीय स्वाभिमान, देशप्रेम व स्वाधीनता के लिए सबकुछ बलिदान कर देने की प्रेरणा सदैव ग्रहण करती रहेंगी।

भामाशाह का चरित्र चित्रण

उत्तर : पं० गंगारत्न पाण्डेय द्वारा रचित खण्डकाव्य '**मेवाड़ मुकुट**' में भामाशाह एक प्रमुख पात्र है। महाराणा प्रताप को भामाशाह का परिचय कवि पृथ्वीराज ने दिया था। भामाशाह मेवाड़-भूमि के अत्यन्त धन-सम्पन्न सेठ हैं। उन्होंने मेवाड़ की रक्षा के लिए अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति राणा प्रताप को दे दी। आज के मन्त्रियों के लिए भामाशाह जैसे मन्त्रियों का चरित्र अनुकरणीय है। भामाशाह के चरित्र की प्रमुख विशेषताओं का चित्रण इस प्रकार किया जा सकता है—

(1) उत्साही एवं प्रेरक—भारत के दानवीरों में भामाशाह का नाम प्रसिद्ध है। राष्ट्र-सेवा के लिए उन्होंने अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति दान में दे दी। प्रथम मिलन में ही वे राणाप्रताप का उत्साह बढ़ाते हैं। भामाशाह की प्रेरणा से ही राणा प्रताप युद्ध करने के लिए पुन: तैयार होते हैं। भामाशाह के ये प्रेरणात्मक शब्द उनके निराश मन में आशा की ज्योति भरनेवाले हैं—

अविजित हैं, विजयी भी होंगे, देव, शीघ्र नि:संशय।
मातृभूमि होगी स्वतन्त्र फिर, हम होंगे फिर निर्भय॥

(2) सच्चे देशभक्त—भामाशाह के हृदय में देश के प्रति अपार अनुराग है। अपनी मातृभूमि की रक्षा हेतु वे सर्वस्व अर्पित कर देना चाहते हैं। उनका विचार है कि जिस देश में व्यक्ति ने जन्म लिया है, उस देश पर तन-मन-धन न्योछावर करना प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य है। भामाशाह कहते हैं—

आज एक अवसर आया है, देव उऋण होने का।
देश-जाति-कुल की सेवा का, सुकृत-बीज बोने का॥

(3) शिष्टाचारी एवं विनम्र—भामाशाह अत्यन्त शिष्ट तथा नम्र स्वभाव के व्यक्ति हैं। वे कहते भी हैं—

वह अधिकार देव सबका है, यह कर्त्तव्य सभी का।
सबको आज चुकाना है ऋण, मेवाड़ी माटी का॥

(4) आदर्श दानवीर—भामाशाह मातृभूमि की रक्षा के लिए महाराणा प्रताप को अपनी लाखों की सम्पत्ति उत्साहपूर्वक देते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि भामाशाह की त्याग-भावना की समता नहीं की जा सकती। कवि पृथ्वीराज भामाशाह की दानवीरता की प्रशंसा इन शब्दों में करते हैं—

धन्य स्वदेश-प्रेम भामा का! धन्य त्याग यह अक्षर।
शिव, दधीचि की गरिमा पा ली, तुमने सब कुछ देकर।।

महाराणा प्रताप भी भामाशाह की दानवीरता की अत्यन्त प्रशंसा करते हैं।

(5) कर्त्तव्यपरायण—भामाशाह का चरित्र एक कर्त्तव्यपरायण नागरिक का चरित्र है। अपनी कर्त्तव्यपरायणता से प्रेरित होकर वे महाराणा प्रताप को अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति अर्पित कर देते हैं। वे मानते हैं कि स्वदेश पर मर-मिटना उनका महान् कर्त्तव्य है। उनके ही शब्द देखिए—

यदि स्वदेश के मुक्ति-यज्ञ में, यह आहुति दे पाऊँ।
पितरों सहित, देव, निश्चय ही, मैं कृतार्थ हो जाऊँ।।

आज के अर्थप्रधान युग में, जबकि हर व्यक्ति अपने सुख और भोग के लिए धन-संग्रह कर रहा है, भामाशाह का त्यागवृत्ति पर आधारित चरित्र नि:सन्देह प्रेरणास्पद है। वे निश्चय ही इस युग के सबसे महान् दानी माने जाने चाहिए।